B.A. III Hons
paper-VI

भारत की मध्य पाषाण कालीन संस्कृति.

Middle ~~Palaeolithic~~ Mesolithic culture of India.

मध्य पाषाण कालीन संस्कृति

पुरापाषाण काल और नव पाषाण काल संस्कृति के बीच की कड़ी समझी जाती है। प्रारम्भ में पाषाण काल को पुरापाषाण काल एवं नवपाषाण काल दो ही कालों में विभाजित है। तथा मध्य पाषाण काल का अस्तित्व नहीं माना जाता था। किन्तु अब दोनों कालों के बीच इस काल का अस्तित्व निरापद स्वीकार कर लिया गया है। इस युग का प्रारम्भ 10,000 ई०पू० के आस-पास तथा अन्त 5,000-6000 ई०पू० के आस-पास हुआ। यूरोप के कुछ भागों में यह 2,000 ई० पू० तक विद्यमान रहा। 10,000 ई० पू० के आस-पास हिम-चादर के उत्तर की ओर खिसकने के फलस्वरूप यूरोप में उष्ण जलवायु का आगमन हुआ। भारत एवं पाकिस्तान में मध्य पाषाण कालीन संस्कृति का व्यापक विस्तार था। उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त में पेशावर के जमाल-गढ़ी से दक्षिण भारत में तिन्नेवली तथा सिंध में कराची से बिहार में सरायकेला तक यह संस्कृति प्रसरित थी। जी० आर० शर्मा एवं उनके सहयोगियों ने विन्ध्य क्षेत्र में मोरहना पहाड़, बघहीखोर, लेखहिया, चोपनी-माण्डो बेलन घाटी, तथा गंगा घाटी में सराय-नाहरराय से मध्य पाषाण कालीन संस्कृतियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

गंगाघाटी में स्थलों की संख्या नाममात्र की है। ये केवल इलाहाबाद और प्रतापगढ़ क्षेत्रों में ही मध्य पाषाण काल के अवशेष ओवस और लेक्स के किनारे हैं। अन्य गंगा घाटी के क्षेत्रों में किसी प्रकार के पुरापाषाणकालीन या मध्य पाषाण कालीन संस्कृति के प्रमाण नहीं प्राप्त हो सके हैं। गंगाघाटी में पत्थरों के रूप में निर्माण सामग्री उपलब्ध न होने के कारण इन पत्थरों का आयात इस क्षेत्र में 80 कि० मी० दूर विन्ध्य क्षेत्र से किया जाता था। संभवतः इस क्षेत्र में मानव निवास की अन्य सुविधायें रही-

Scanned with CamScanner

जिसके कारण मानव का जोर रहा होगा। नदियों के किनारे जो कि पहाड़ी क्षेत्रों में है प्रागैतिहासिक मानव के लिए अादेश क्षेत्र थे। जहाँ पर उसकी आवश्यकताओं की सामग्रियाँ उपलब्ध रही होगी। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों में भी इस संस्कृति के अवशेषों की उपलब्धि हुई। संभवतः उस क्षेत्र में पुरापाषाण काल एवं मध्यपाषाण काल तक जलवायु निवास के लिए उपयोगी थी। यहाँ तक कि बाद की संस्कृतियाँ भी इस में विकसित हुई एवं कालान्तर में खराब जलवायु के कारण काल के गर्त में समा गयी। पश्चिमी समुद्रतटीय क्षेत्रों में संस्कृति में बहुलता तो है परन्तु उपकरण बहुत कम प्राप्त होते है जिसका कारण विद्वान अधिक वर्षा या खनिज एवं अन्य उपयोगी जंगल वन को मानते है। कर्नाटक तमिलनाडु क्षेत्रों में मध्य पाषाण काल की संस्कृतियों के अवशेष अपेक्षाकृत कमप्राप्त हुए है। सम्भवतः इन क्षेत्रों में सर्वेक्षण की कमी हो रही। साइट्स संख्या में अधिक न होने पर भी बहुत महत्वपूर्ण है। विद्वान इन संस्कृतियों की उपस्थिति को भिन्न-भिन्न वातावरण में जलवायु परिवर्तनों को मानते है। बहुधा देखा गया है कि मध्य पाषाण काल संस्कृति के बहुत उत्कृष्ट उदाहरण पुरास्थलों की बहुलता नदियों के किनारे एवं जंगली क्षेत्रों में देखी जाती है। जिसमें चित्रकूट क्षेत्र, बस्तर या जगदपुर, कोरापुर क्षेत्र उड़ीसा, महानदी क्षेत्र रायपुर, बिलासपुर आदि।

उपकरण :→ मध्य पाषाण कालीन उपकरण अति लघु आकार में 5 से.मी. लम्बाई तक प्राप्त होते है। कभी-कभी तो ऐसे छोटे-उपकरण मिलते है कि इनके हाफटिक के विषय में भी सन्देह होने लगता है। इन उपकरण प्रकारों में विविधता होती है। कुछ क्षेत्र में मध्य पाषाण काल संस्कृति के प्रारम्भिक चरणों को ये उपकरण दर्शाते है। कुछ क्षेत्रों में क्रमिक विकास पर प्रकाश डालते है। एवं कुछ ऐसे क्षेत्रों की विकसित रूप में प्रदर्शित करते है। प्रारम्भिक स्थलों में वीरभानपुर

मुख्य है। जबकि क्रमिक विकास के उदाहरणस्वरूप गंगाघाटी, बागौर, भीमबेटका आदि का उल्लेख किया जा सकता है। इनके बाद पूर्ण विकसित क्षेत्रों में आदमगढ़, लांघनाज चट पाटने आदि है। इनके उपकरणों में विविधता देखने को मिलती है। लघु पाषाणकालीन उपकरणों के-विभिन्न प्रकार एवं इनके साथ-साथ ब्लेड की तरह फ्लेक, साइड स्क्रैपर, इन्ड, बायफेसियल प्वाइंट आदि भी प्राप्त होते हैं। दूसरे प्रकारों में हैमर स्टोन रिंग्स बाल, मेस हेड, कबेने आदि हैं। इन उपकरणों पर सूक्ष्म रिटचिंग या धारिका के साथ-साथ विकास की अन्य विशेषताएं भी देखने को मिलती हैं जैसे हथौड़ा, रिंग्स, बाल आदि का प्रयोग।

मृद्भाण्ड :→

इस संस्कृति के अनेक स्थलों में मृद्भाण्ड अवशेष प्राप्त हुए हैं किन्तु ये इतने अल्पन्त होते हैं जिनके विषय में निश्चित रूप से कह पाना कठिन है फिर कुछ विद्वानों ने इस पर प्रकाश डालने का का प्रयास किया गया है। मृद्भाण्ड के अवशेष बागौर, लेखैया, बघईखोर, धरखरिया, चोपनीमाण्डो, मोरहाना पहाड़, नागार्जुन कोंडा से उपलब्ध हैं। ये कम सनी-मिट्टी द्वारा निर्मित हैं, जो अधिक रेतीली है। पात्र हस्त निर्मित एवं चाक-निर्मित दोनों प्रकार के हैं। अधिकतर पात्र कठोर हैं एवं लाल रंग के हैं परन्तु इनके रंगों में विभेद देखने को मिलता है। इन पात्रों पर कहीं-कहीं चित्रण पाया जाता है। अधिकतर चित्रण हड्डी की छाप द्वारा किए चित्रण बागौर तथा लांघनाज से प्राप्त होते हैं।

शैल चित्रण :— मध्यपाषाणकालीन अवशेष विभिन्न गुफाओं और शैलाश्रयों के उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। बहुत से शैलाश्रयों में छतों एवं दीवारों पर चित्रण प्राप्त होते हैं। जिनमें से कुछ को प्रागैतिहासिक चित्रकला माना गया है। ऐसे चित्रण मध्यप्रदेश के भोपाल, होशंगाबाद, विदिशा, सागर एवं उत्तर में मीरजापुर के क्षेत्रों में पाए गये हैं। इस शैल-चित्रों का विस्तृत अध्ययन हो चुका

विद्वानों के अनुसार ये चित्रण बहुत लम्बे समय को [illegible] करते हैं। डा० वाकणकर इनका प्रारम्भ उच्च पुरापाषाण काल से मानते हैं परन्तु वी० एन० मिश्रा एवं यशोधर मठपाल मध्यपाषाण काल मानते हैं। ये चित्र अधिकतर गेरुए रंग के हैं परन्तु कुछ अधिक नीला एवं पीला रंग से भी निर्मित हैं।

आभूषण:→ इस काल में कला के प्रमुख उदाहरण सबसे पहले प्राप्त होते हैं। ये दो रूपों में मिलते हैं। इनमें हार, कुण्डल, मनके, अंगूठी विभिन्न वस्तुओं पर निर्मित हैं। पूर्व में ये अवशेष मात्र आदमगढ़ एवं बागौर जैसे स्थलों से ही प्राप्त हुए किन्तु पिछले दो दशकों में गंगाघाटी से अच्छे उदाहरण प्राप्त हुए हैं। बहुमूल्य पत्थर एवं हड्डी पर निर्मित मनके बागौर एवं महदहा से प्राप्त होते हैं जहाँ से कुण्डल की भी प्राप्ति हुई है।

शवावशेष:— शव दफनाने के अवशेष मुख्यतः गंगा क्षेत्र, विन्ध्य, पश्चिमी एवं मध्य क्षेत्र से प्राप्त होते हैं। पूर्वी एवं उत्तरी क्षेत्र में दफनाने की प्रक्रिया ज्ञात नहीं है। इनमें मुख्य हैं भीमबेटका, डोरोथी (म.प्र.), सरायनाहर राय, बघईखोर, लेखहिया (उ.प्र.) बागौर राजस्थान, लांघनाज गुजरात से प्राप्त हुए हैं। इनमें से विकसित पयस्थल मध्यपाषाण काल को प्रदर्शित करते हैं।

निवास पद्धति:→ मध्य पाषाण कालीन मानव विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार के स्थानों पर रहता था एवं जीवनयापन करता था। इनको विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त होती थी। सबसे पुराना निवास का अवशेष बेलनघाटी में चोपनीमाण्डो नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। यहाँ पर पीरियड से स्तम्भगर्त के अवशेष मिलते हैं। इस काल के झोपड़ी निर्माण पर प्रकाश डालती हैं। ये झोपड़ी गोलाकार या अण्डाकार थी। सतह को पत्थर के टुकड़ों से तैयार किया था। भीमबेटका के एफ-23 से 6 मीटर लम्बी एवं 7 मीटर चौड़ी पत्थरों की सतह प्राप्त हुई है।

भोजन पद्धति:— इस काल में नागी और लम्बीबालों का प्रादुर्भाव हो गया था जिनमें विभिन्न प्रकार के-

Scanned with CamScanner

के वनप्राणी रहते थे। अन्य भोजन सामग्री में कन्दमूल फल, पत्तियाँ एवं जड़े शामिल है। शाकाहारी खाद्य अवशेष तो पुरास्थल में सुरक्षित नहीं रह सकते परन्तु इनके विषय में जानकारी उस क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी मानव के खाद्य पदार्थ के अध्ययन से प्राप्त होती है। चोपनी माण्डो से जंगली चावल के दाने मिट्टी के टुकड़ों में फँसे हुए प्राप्त, एवं जिनकी तिथि नवपाषाण काल तक मानी जाती है।

पुरापाषाण काल के बाद वातावरण में बदलाव आया। हिमयुग के बर्फीले मौसम के बाद वातावरण गर्म हुआ। इसके बाद परिवर्तनशील समय का वातावरण भू-धरा की बनावट एवं बदलाव के कारण वातावरण भू-धरा के ऊपर प्रभाव उसके साथ निवास करने वाले मनुष्यों के ऊपर प्रभाव पड़ा। दलदली भूमि धीरे-धीरे लम्बी घासों एवं बड़े जंगलों में परिवर्तित हो गयी। भूमि में उर्वरक क्षमता बढ़ी जिससे कई प्रकार की वनस्पति का उत्पत्ति हुआ। अतः जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पशु वनस्पति आदि पर पड़ा जो कि बदली हुई जलवायु में सुरक्षित रहने की थी। बड़े-बड़े हाथी और जंगली भैंस, बैल, गैंडा आदि की समाप्ति हुई एवं छोटे-छोटे जानवरों का प्रादुर्भाव हुआ। इन जानवरों की बनावट ऐसी थी जो कि घास वाली जमीन पर चल सकें एवं परिवर्तित आहार पर जीवित रह सकें। मनुष्य जो कि परिस्थितियों का दास है को भी इस बदली हुई हालात के अनुसार अपने बदलाव लाना पड़ा। बड़े-बड़े शिकारों पर आश्रित रहकर जीवित रहने वाला प्राणी अब छोटे-छोटे शिकारों पर निर्भर रहने लगा। इसी प्रकार से उपकरण निर्माण भी करना पड़ा। इन उपकरणों के अलग-अलग उपयोग करके ~~सर्व~~ अपनी समस्याओं के समाधान के योग्य बनाना था। इस काल के तकनीकी को क्रान्ति का युग का काल समझा जाना चाहिए।

इन स्तरों में रेडियो मीट्रिक सामग्री प्राप्त हुआ है जिनमें ~~(1000)~~ 10000 वर्ष से पूर्व से लेकर 2000 वर्ष पूर्व तक की तिथि प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner